



पाठ – तेरह

मणिपुरी रास

संस्कृति, पहचान, सम्पूर्ण, नृत्य, सम्मिलित, शास्त्रीय, विशिष्ट, आधार, पवित्र, भक्ति, उपासना, विधि, परम्परा, अभिषेक, आयोजन, आरंभ, अग्रहायण, कार्तिक, वैशाख, पूर्णिमा, मण्डप, गुरु, रासधारी, नट-संकीर्तन, सूत्रधार, गायन, मृदंग, वादन।



मणिपुरी रास मणिपुरी संस्कृति की विशेष पहचान है। यह भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यह गीत और नृत्य का सम्मिलित रूप है। यह भारत के शास्त्रीय नृत्यों में विशिष्ट स्थान रखता है। नृत्य का आधार राधा और कृष्ण का पवित्र प्रेम है। यह भक्ति और उपासना की एक विधि है।

मणिपुर में रास की परंपरा राजा भाग्यचन्द्र के राज्य काल से चली आ रही है। सन् 1776 ई. को श्री श्री गोविन्द जी का अभिषेक हुआ। लंथबान (वर्तमान काँचीपुर) के रास-मण्डल में प्रथम रास-नृत्य का आयोजन किया गया।

मणिपुरी रास के पाँच प्रकार हैं। उनके नाम हैं, महारास, कुंजरास, वसन्त रास, नित्य रास और दिवारास। महारास, कुंजरास और वसन्त रास का आरंभ राजा भाग्यचन्द्र के राज्य काल में हुआ था। अग्रहायण पूर्णिमा के दिन महारास, कार्तिक पूर्णिमा के दिन कुंजरास और वैशाख पूर्णिमा के दिन वसन्त रास किया जाता है। नित्य रास का आरंभ राजा चन्द्रकीर्ति के समय में हुआ था। यह रास वैशाख और अग्रहायण महीनों को छोड़ कर कभी भी किया जा सकता है। दिवा रास राजा चुड़ाचाँद सिंह जी के समय आरंभ हुआ था। यह रास किसी भी महीने में दिन के समय किया जाता है।

रास-नृत्य का आयोजन श्रीश्री गोविन्द जी के मण्डप, श्रीश्री विजय गोविन्द जी के मण्डप तथा अन्य स्थानों पर किया जाता है। रास एक गुरु द्वारा सिखाया जाता है। उस गुरु को रासधारी कहा जाता है। रास शुरू होने के पहले नट-संकीर्तन होता है। इसके बाद सूत्रधार के गायन, मृदंग वादन, शंख वादन, वंशी वादन, आदि के साथ रास-नृत्य शुरू होता है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थों को समझो :—

संस्कृति	= आचरणगत परंपरा, संस्कार।
विशेष	= असामान्य, असाधारण।
पहचान	= जानने की क्रिया।
विश्व	= संसार।
सम्मिलित	= मिलाया हुआ, एकत्र हुआ।
शास्त्रीय नृत्य	= निश्चित प्राचीन नियमों पर आधारित नृत्य।
विशिष्ट	= विशेष।
भक्ति	= अपने से महान के प्रति पूजा भाव।
उपासना	= आराधना, पूजा, पास बैठने की क्रिया।
विधि	= नियम, प्रणाली।
परम्परा	= चला आता हुआ क्रम, रीति-रिवाज।

राज्य काल	=	शासन काल।
अभिषेक होना	=	पूजा विधि के अनुसार स्थापित करना।
आयोजन करना	=	प्रबंध करना।
सूत्रधार	=	नाट्य शाला अथवा रास का प्रधान नट।
गायन	=	गाने की क्रिया।
वादन	=	बजाना।

2. उत्तर लिखो :—

- (क) मणिपुरी संस्कृति की विशेष पहचान क्या है ?
- (ख) मणिपुरी रास किसका सम्मिलित रूप है ?
- (ग) मणिपुरी रास कैसा नृत्य है ?
- (घ) इसका आधार क्या है ?
- (ङ) इसकी विधि क्या है ?
- (च) इसकी परंपरा किसके राज्य काल से चली आ रही है ?
- (छ) श्री श्री गोविन्दजी का अभिषेक कब हुआ ?
- (ज) रास का प्रथम आयोजन कहाँ हुआ था ?
- (झ) मणिपुरी रास के कितने प्रकार हैं ? उनके नाम लिखो।
- (ञ) राजा भाग्यचन्द्र के राज्य काल में आरंभ किए गए रासों के नाम लिखो।
- (ट) महारास का आयोजन कब होता है ?
- (ठ) कुंजरास का आयोजन कब होता है ?
- (ड) वसन्त रास का आयोजन कब होता है ?
- (ढ) नित्य रास का प्रारंभ किस राजा के समय हुआ था ?
- (ण) इसका आयोजन कब होता है ?
- (त) दिवारास का प्रारंभ किसके राज्य काल में हुआ था ?
- (थ) इसका आयोजन कब होता है ?
- (द) रास-नृत्य का आयोजन कहाँ-कहाँ होता है ?
- (ध) ईश्वर की प्राप्ति के लिए हमें क्या छोड़ना चाहिए और क्यों ?
- (न) महारास किसका प्रतीक है ?
- (प) रास के गुरु को क्या कहा जाता है ?
- (फ) रास शुरू होने के पहले क्या होता है ?

(व) रास की शुरूआत किस-किसके साथ होती है ?

(भ) भारत के शास्त्रीय नृत्यों के नाम लिखो ।

(म) मणिपुर का सबसे प्रचलित लोकनृत्य का नाम क्या है ? यह नृत्य कब किया जाता है ?

3. वाक्य बनाओ :—

पहचान -----

विश्व -----

उपासना -----

विधि -----

प्रथम -----

आयोजन -----

महीना -----

गायन -----

बाधक -----

वादन -----

4. कोष्ठक में दिए शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरो :—

(क) मणिपुरी रास की परंपरा के राज्य काल से चली आ रही है ।

(राजा चुड़ाचाँद/राजा भाग्यचन्द्र)

(ख) मणिपुरी रास के प्रकार हैं । (पाँच/चार)

(ग) नित्य रास का आरंभ के समय में हुआ था ।

(राजा चंद्रकीर्ति/राजा भाग्यचन्द्र)

(घ) रास के गुरु को कहा जाता है। (रासधारी/रास गुरु)

(ङ) रास शुरू होने के पहले ----- होता है (नट संकीर्तन / वंशी वादन)

5. तालिका को देखो और वाक्य बनाओ :—

महारास	वैशाख पूर्णिमा के दिन	किया जाता है।
कुंजरास	अग्रहायण पूर्णिमा के दिन	
वसन्तरास	कार्तिक पूर्णिमा के दिन	

.....
.....
.....

6. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (x) का निशान लगाओ:—

- (क) मणिपुरी रास भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है।
- (ख) नित्यरास वैशाख और अग्रहायण महीनों में किया जाता है।
- (ग) दिवारास किसी भी महीने में रातके समय किया जाता है।
- (घ) ईश्वर की प्राप्ति में अहम्-भाव बाधक होता है।
- (ङ) रास शुरू होने के पहले नट-संकीर्तन नहीं होता।

7. नीचे कुछ शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द दिए गए हैं इनको ध्यान से पढ़ो और याद करो :

दिवा	—	रात्रि
दिन	—	रात
पूर्णिमा	—	अमावस्या
पवित्र	—	अपवित्र
प्रसिद्ध	—	अप्रसिद्ध
आरंभ	—	अन्त
शुरू	—	आखिर